सतियों के देवल – जैसलमेर क्षेत्र के पालीवाल ब्राह्मण समुदाय के गाँवों की अनूठी पहचान

*दिलीप कुमार
**डॉ. तमेघ पंवार

शोध सारांश

सती की परम्परा राजस्थान में प्राचीन काल से ही देखने को मिलती है। यह परम्परा के साथ–साथ धार्मिक प्रकृति के रूप में इस क्षेत्र प्रचलन में रही है। इस प्रथा से सम्बन्धित साहित्यिक साक्ष्यों के साथ में पुरातात्विक साक्ष्य भी अधिक मात्रा में मिलते है। मध्यकाल में यह प्रथा बड़े स्तर पर मुख्यतः पश्चिमी राजस्थान में देखने को मिलती है। इस प्रथा से सम्बन्धित अनेक पुरातात्विक स्रोत्र देखने को मिलते है। कई पुरातात्विक स्रोत्रों पर संवत् के साथ सती होने या देवलोक होने के साक्ष्य देखने को मिलते है। जिन पुरातात्विक साक्ष्यों पर लेख नहीं है उनकों सती से सम्बन्धित दिये गये अंकन से पता लगाया जा सकता है। यह परम्परा मुख्यतः उच्च समाज में प्रचलित थी परन्तु सभी समाजों में भी इसको नकारा नहीं जा सकता है। जैसलमेर के आस–पास पालीवालों द्वारा बसाये गये गाँवों के आस–पास अनेक ऐसे स्तम्भ या देवलियाँ प्राप्त होती है जो 'सती की देवलियों' के नाम से जानी जाती है। इस लेख में जैसलमेर क्षेत्र में सती परम्परा की प्राचीन देवलियों से लेकर पालीवाल ब्राह्मणों द्वारा बनवाये 'सती के देवल' की परम्परा के क्रम और शिल्पकला का अध्ययन किया जायेगा।

संकेत शब्द – सती के देवल, देवलियाँ, पालीवाल ब्राह्मण, पटुपान, शिला, सतियाँ।

सती परम्परा भारतीय समाज में प्राचीनकाल से 19वीं शताब्दी तक सती निषेध कानून 1829[1] स्थापित होने तक मौजूद रही एक विशिष्ट परम्परा थी। वैदिक काल में सती प्रथा प्रतीकात्मक रूप से मौजूद थी।[2] बीच–बीच में कई कालों में यह प्रथा साहित्यिक एवं पुरातात्विक स्रोत्रों में दिखाई नहीं देती है परन्तु गुप्तकाल में सती प्रथा का उल्लेख मिलता है जो भारतीय इतिहास में पहला पुरातात्विक साक्ष्य भानुगुप्त के एरण अभिलेख से 510 ईस्वी का प्राप्त होता है।[3] हर्षवर्धन के समय भी सती प्रथा प्रचलन में थी हर्षचरित्र से पता चलता है कि हर्ष की माता यशोमती सती हो गई थी तथा हर्ष की बहिन राजश्री को उसके पति की हत्या के बाद सती होने के समय एक बौद्ध भिक्षु ने बचाया था।[4] यह प्रथा मध्यकाल में भी राजपूत व ब्राह्मण जातियों में मौजूद थी। आधुनिक भारत के अग्रदूत कहे जाने वाले राजा राममोहन राय ने अपने बड़े भाई की पत्नी यानि अपनी भाभी के सती होने पर सती प्रथा को पूर्णतया प्रतिबंधित करने के लिए विलियम बेंटिक से इस पर एक कानून बनाने का अनुरोध किया।[5] भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों जैसे – कर्नाटक, मध्यप्रदेश, गुजरात, सिंध इत्यादि की तरह ही राजस्थान में भी सतियों की देवी रूप में पूजा किये जाने की प्राचीनकाल से लोक परम्परा मौजूद रही है। इसी परम्परा के कारण सतियों की स्मृति को अक्षुण बनाये रखने, उनके धार्मिक महत्व को बताने व पूजन के लिये विभिन्न प्रकार की मूर्तियों सहित देवलियों को स्थापित करने की परम्परा भी प्राचीनकाल से विद्यमान रही है। जैसलमेर क्षेत्र के गांवों में मौजूद प्राचीन

धरोहर–रूपी सतियों की इन देवलियों को स्थानीय बोली में शिला/हिला/शील/हील/मूरत/थान इत्यादि नामों से जाना जाता है। जिनकी गांवों में आज भी प्राचीन धरोहरों के रूप में मान्यता बरकरार हैं लेकिन जैसलमेर क्षेत्र में पालीवाल ब्राह्मण समुदाय के पुराने गाँवों में इन देवलियों को छोटे देवालयों के रूप में स्थापित करने की एक अनूठी परम्परा भी विकसित हुई थी, जिसके साक्ष्य जैसलमेर व उसके पड़ौसी जिले बाड़मेर, जोधपुर, फलोदी, पाली व बीकानेर के पालीवाल ब्राह्मण समुदाय के पुराने गांवों में आज भी देखने को मिलते हैं। इन सती देवालयों को स्थानीय भाषा में *सतियों के देवल* के नाम से जाना जाता है। यह सती देवल, पालीवाल ब्राह्मणों के गाँवों और उनके शमशान स्थलों की विशेष पहचान हैं। पालीवाल ब्राह्मणों के सन्दर्भ में विभिन्न ग्रंथों व इतिहासकारों *लक्ष्मीचन्द सेवक*[6], *शिवनारायण पालीवाल*[7], *नन्दकिशोर शर्मा*[8], *डॉ. हुकमसिंह भाटी*[9], *मांगीलाल व्यास 'मयंक'*[10], *पण्डित विश्वेश्वर नाथ रेऊ*[11], *कर्नल जेम्स टॉड*[12], *मुंहता नैणसी*[13], *मुंहता नैणसी*[14], *रामवल्लभ सोमानी*[15], *हरदयाल सिंह*[16], *के.डी. इरस्कीन*[17], *हरिवल्लभ माहेश्वरी*[18], *डॉ. मेघाराम गढवीर*[19], *ऋषिदत्त मोहनलाल कुलधर पालीवाल*[20] से जानकारी प्राप्त होती है जिसके अनुसार यह पालीवाल ब्राह्मण समुदाय 13वीं सदी के अंतिम दशक तक मारवाड़ क्षेत्र के पाली नगर में बसता था जहाँ राव सीहा राठौड़ के शासनकाल में इस पाली नगर पर मुस्लिम आक्रान्ताओं द्वारा किये गये हमलों के कारण यह नगर उजड़ गया जिसके पश्चात् यह समुदाय पाली छोड़कर जैसलमेर की तरफ आ बसा। तत्कालीन जैसलमेर रियासत के चारों ओर इस पालीवाल ब्राह्मण समुदाय के 84 खेड़े (गांव) बसे हुए थे। लोकप्रचलन में है कि 19वीं सदी में महारावल मूलराज सिंह के शासनकाल के दौरान रियासत के दीवान सालिमसिंह मोहता से किसी कारणवश हुई अनबन के कारण यह समुदाय जैसलमेर से पलायन कर अन्यत्र चला गया। पीछे इनके द्वारा त्याज्य गाँव सूने हो गये जिनमें से कुछ समय के साथ पुनः आबाद हो गये व कुछ अभी भी सुनसान खंडहर के रूप में मौजूद है। यह ब्राह्मण समुदाय मूलतः गौड़ ब्राह्मण था जो पाली से पलायन कर आने के कारण 'पाली वाले ब्राह्मण' अर्थात 'पालीवाल ब्राह्मण' कहलाये। ये पालीवाल ब्राह्मण बड़े धर्मात्मा व धार्मिक प्रवृति के थे जो यज्ञ आदि किया करते थे व कठोर नियम का पालन किया करते थे इनके बनाये सैकड़ों यज्ञ स्तम्भ, तालाब, कूप, खड़ीन, धर्मशालाएँ, छतरियाँ, देवलियाँ, देवल आज भी इस क्षेत्र में मौजूद है।[21]

जैसलमेर क्षेत्र में सतियों की देवलियों का इतिहास –

जैसलमेर क्षेत्र में सतियों की देवलियों के सबसे प्राचीनतम प्रमाण 9वीं–10वीं शताब्दी की देवलियों के रूप में प्राप्त होते हैं। इन प्रारम्भिक देवलियों को उनकी विशिष्ट बनावट के कारण आसानी से पहचाना जा सकता है, जिन्हें इस क्षेत्र के तत्कालीन परमार शासकों से जोड़कर देखा जाता है। यह स्तम्भ के रूप में या देवल के रूप में प्राप्त होते है। किसी पर अभिलेख खुदा है जिससे इसकी पहचान करना बहुत ही आसान परन्तु कुछ बिना अभिलेख के या अभिलेख धुमिल होने के कारण पहचान करना बहुत ही मुश्किल है। यह कहना बहुत ही मुश्किल है कि सभी स्तम्भ या देवलियाँ सतियों से सम्बन्धित ही है परन्तु लोक मान्यता के अनुसार यह सती स्तम्भ या सती की देवलियों के नाम से जाने जाते है। इस प्रकार की देवलियाँ या स्तम्भ मेरे (दिलीप कुमार) द्वारा यहाँ के गावों में किये गये सर्वेक्षण के दौरान निम्नलिखित स्थानों पर देखने को मिली है –

1. **पारेवर गांव –** इस गाँव में मौजूद सिलाला खड़ीन के किनारे लाल पत्थर से बनी 11 फिट ऊँची एक सती की देवली मौजूद है जिस पर हाथ जोड़े खड़ी स्त्री की मूर्ति देवली(स्तम्भ) के शीर्ष भाग पर बनी है परन्तु देवली का अधिकांश भाग घिस कर नष्ट हो चुका है।

चित्र सं.1, पारेवर गांव में स्थित सती की देवली (फोटो–पार्थ जगाणी)

2. **मंधा गांव –** इस गाँव के नजदीक पठार पर लाल पत्थर से बनी लगभग 14 इंच चौड़ी व 04 फुट ऊँची देवली (स्तम्भ) मौजूद है जिस पर एक पुरुष व एक महिला की आकृति बनी हुई है परन्तु इसका अधिकांश भाग नष्ट हो चुका है। **(चित्र सं.–2)**

चित्र सं.–2, मंधा गांव में स्थित सती की देवली (फोटो–दिलीप कुमार)

3. **रत्ता गांव –** गाँव के नजदीक दो छोटी पहाड़ियों पर दो भिन्न देवलियाँ लाल पत्थर से बनी लगभग 13–14 इंच मोटी व 05 फीट ऊँची मौजूद हैं जिनके शीर्ष भाग पर खड़ी महिलाओं की आकृति उकेरी हुई है। इनमें से एक पर कुछ अस्पष्ट लेख होने के चिन्ह भी दृष्टव्य होते हैं परन्तु इनका अधिकांश भाग नष्ट हो चुका है। **(चित्र सं–3)**

चित्र सं.–3, मंधा गांव में स्थित सती की देवली (फोटो–दिलीप कुमार)

4. **डांगरी गांव –** गाँव के मुख्य तालाब की पाल के पीछे मौजूद शमशान स्थल में भूरा बलुआ पत्थर से बनी लगभग 12–13 इंच मोटी व 06 फिट लम्बी नीचे आड़ी गिरी हुई खंडित देवली मौजूद है जिस पर दो खड़ी महिलाओं की मूर्तियाँ अंकित है जो संभवतः एक साथ ही सती हुई होंगी।**(चित्र सं.–4)**

चित्र सं.–4, डांगरी गांव में स्थित सती की देवली (फोटो–दिलीप कुमार)

5. **मेहरेरी गांव –** इस गाँव के पुराने अवशेषों से कुछ दूरी पर एक पठार पर पाँच देवलियाँ एक साथ मौजूद है जो भूरे पत्थर से बनी लगभग 16–17 इंच चौड़ी व 6–7 फिट ऊँची हैं इन में से दो देवलियों पर दो एक साथ खड़ी महिलाओं की आकृति उकेरी नजर आ रहीं है। **(चित्र सं.–5)**

चित्र सं.–5, मेहरेरी गांव में स्थित सती की देवलियाँ (फोटो–पार्थ जगाणी)

इसी प्रकार की स्तम्भनूमा देवलियाँ अन्य गांवों में भी देखने को मिलती हैं जो सभी लाल–भूरे रंग के लगभग एक–डेढ़ फुट मोटे पत्थर से बनी हुई नीचे से चौड़ी व ऊपर की तरफ कम चौड़ी होती हुई गोलाई लिए हुए है इनके ऊपरी भाग पर सती हुई स्त्री की मूर्ति हाथ जोड़े त्रिभँगी मुद्रा में मौजूद है। इनमें से कुछ मूर्तियों में उनके अलंकार व वेशभूषा भी दिखाई देती हैं जिनमें कानों में बड़े गोलाकार कुंडल, केशसज्जा में जुडा बना और धोतीनुमा शैली में साड़ी विशिष्ट है। इन सभी देवलियों के लेख नष्ट हो चुके है या उन पर मौजूद धारियों के निशान से ऐसा प्रतीत होता है जैसे उन्हें मिटाया गया होगा।

इन देवलियों के पश्चात 11वीं से 13वीं शताब्दी तक भाटी शासनकाल में बनी देवलियाँ भी देखने को मिलती हैं, जिनका निर्माण व शिल्प शैली पुरानी देवलियों से भिन्न प्रकार की हैं। इन पर अंकित वर्ष प्रायः भटिक संवत् में पढने को मिलता है। इस प्रकार की देवलियाँ मुझे जैसलमेर क्षेत्र के गाँवों के सर्वेक्षण के दौरान कुछ निम्नलिखित गाँवों/स्थलों पर देखने को मिलीं हैं –

1. **हड्डा गाँव –** इस गाँव के समीप पठार पर एक देवली जैसलमेर के पीले पाटुपान पत्थर से बनी मौजूद है जो अत्यंत कलात्मक भी है इस देवली के शीर्ष पर अलंकृत शिखर उत्कीर्ण है जिसके नीचे एक व्यक्ति हाथ जोड़े मुद्रा में अग्नि पर विराजमान है जिसके दोनों तरफ दो खड़ी महिलाएँ हाथ जोड़े मुद्रा में हैं उनके नीचे भटिक संवत् 468(1092 ईस्वी) का लेख उत्कीर्ण है और उसके नीचे दीया रखने का आला(स्थान) बना हुआ है।**(चित्र सं–6)**

चित्र सं–6, हड्डा गांव में स्थित सती की देवली (फोटो–दिलीप कुमार)

2. **जाजिया गांव –** इस गाँव की बसावट के पूर्व दिशा में नदी किनारे तीन अलग–अलग स्थलों पर तकरीबन 20–25 के करीब देवलियाँ देखने को मिलती हैं, जो सभी प्राचीन व भटिक संवत् 6ठी व 7वीं शताब्दी (ईस्वी की शताब्दी 12वीं व 13वीं) की हैं जो सभी देवलियाँ जैसलमेर के पीले पाटूपान पत्थर से निर्मित हैं। इनकी मोटाई 8–10 इंच व उँचाई 04 से 07 फुट तक हैं इनके स्तंभों के शीर्ष पर हाथ जोड़े मुद्रा में महिलाएँ खड़ी हुई हैं किसी–किसी देवली में पुरुष भी साथ में खड़े दिखाई देते हैं जिनके नीचे लेख मौजूद है जिनमें से कुछ पर अंकित वर्ष भटिक संवत् 520(1144 ईस्वी), भटिक संवत् 551(1175 ईस्वी)[22], भटिक संवत् 591(1215 ईस्वी) मिलते हैं।**(चित्र सं–7)**

चित्र सं–7, जाजिया गांव में स्थित सती की देवलियाँ (फोटो–दिलीप कुमार)

3. **भू गाँव** – इस गाँव में तीन शमशान स्थल हैं जिनमें से एक में 13वीं शताब्दी तक की कुछ सतियों की प्राचीन देवलियाँ मौजूद हैं जो सभी जैसलमेर के पीले पाटूपान पत्थर से निर्मित हैं इनकी मोटाई 8–10 इंच व उँचाई 5–6 फुट हैं इनके स्तम्भों के शीर्ष पर हाथ जोड़े मुद्रा में महिलाएँ खड़ीं हुई हैं जिनके नीचे लेख मौजूद है जो भटिक संवत् 560(1184 ईस्वी), भटिक संवत् 594(1217 ईस्वी)[23], भटिक संवत् 596(1219 ईस्वी), भटिक संवत् 597(1220 ईस्वी) व भटिक संवत् 683(1306 ईस्वी) के हैं और लेख के नीचे दीया रखने के लिए छोटे आळे बने हुए हैं।**(चित्र सं–8)**

चित्र सं–8, भू गांव में स्थित सती की देवलियाँ (फोटो–दिलीप कुमार)

4. **मालसर रो घेड़** – खाभा गाँव के नजदीक मालसर रो घेड़ नामक स्थान पर पहाड़ियों पर पल राजपूत जाति के व्यक्तियों की 15–16 देवलियाँ भटिक संवत् 6ठी से 8वीं शताब्दी (ईस्वी की शताब्दी 12वीं व 14वीं) की देखने को मिली हैं जिनमें से कुछ सतियों की भी हैं तथा उन पर भटिक संवत् 574(1198 ईस्वी), भटिक संवत् 595(1219 ईस्वी), भटिक संवत् 648(1272 ईस्वी), भटिक संवत् 707(1331 ईस्वी) अंकित है तथा कुछ खंडित होने से अपठनीय है। यह सभी जैसलमेर के पीले पत्थर से निर्मित है।**(चित्र सं–9)**

चित्र सं–9, मालसर रो घेड में स्थित सती की देवलियाँ (फोटो–दिलीप कुमार)

इस प्रकार हम देखते हैं कि यह सभी देवलियाँ जैसलमेर के पीले पाटुपान पत्थर से निर्मित, तकरीबन आधा फुट चौड़ी, 4–7 फुट लम्बी और एक ही आकार में ऊपर से गोलाई लिये हुए बनी हुई देखने को मिली हैं, जिनमें से अनेक में लेख स्पष्ट या खंडित अवस्था में मौजूद हैं, तथा उन पर भटीक संवत् में वर्ष उत्कीर्ण हैं और लेख के नीचे दीया रखने के लिये छोटा आला(स्थान) भी उकेरा गया है। इन देवलियों में सतियों की मूर्तियों को हाथ जोड़े सीधा खड़ा दर्शाया गया है।

14वीं शताब्दी के बाद से सतियों की देवलियों के निर्माण में एक बार पुनः भिन्नता परिलक्षित होने लगती है। इस दौर की सतियों की देवलियों पर अकेली स्त्री की मूर्तियाँ कम ही देखने को मिलती हैं अधिकांश देवलियों पर उनके दिवंगत पतियों की मूर्तियाँ उनके साथ में निर्मित होने लगी। जिनमें पति–पत्नी दोनों को एक साथ हाथ जोड़े खड़े दर्शाया जाने लगा था। तथा इन देवलियों में दीया रखने का आला(स्थान) अब गायब हो चुका था तथा इनमें से अधिकांश बहुत ही साधारण हैं जिनमें कलात्मकता का अभाव दिखाई देता है। इस काल की कुछ देवलियाँ निम्नलिखित गांवों में देखने को मिली हैं –

- **दामोदरा गाँव–** गांव में पति पत्नी की एक साथ हाथ जोड़े मुद्रा में वि. सं. 1520(1463 ईस्वी) की देवली देखने को मिली है।**(चित्र सं–10)**

चित्र सं–10, दामोदरा गाँव में स्थित सती की देवली (फोटो–दिलीप कुमार)

- **हड्डा गाँव** में पति–पत्नी की एक साथ हाथ जोड़े मुद्रा में वि. सं. 1587(1530 ईस्वी) की एक देवली।**(चित्र सं. –11)**

चित्र सं–11, हड्डा गाँव में स्थित सती की देवली (फोटो–दिलीप कुमार)

- **गोरेरा गाँव** – गांव में पति पत्नी की एक साथ हाथ जोड़े मुद्रा में वि. सं. 1628(1571 ईस्वी) की देवली देखने को मिली है।**(चित्र सं.–12)**

चित्र सं–12, गोरेरा गाँव में स्थित सती की देवली (फोटो–दिलीप कुमार)

मंदिरनुमा सती देवल – 18वीं शताब्दी से पालीवाल ब्राह्मण समुदाय के श्मशान स्थलों व कहीं–कहीं गाँवों के मध्य भी छोटे मंदिरनुमा देवल स्थापित होने लगे थे। जिनके अवशेष आज भी उनके अधिकांश गांवों में देखने को मिलते हैं। यह मंदिरनुमा देवल अधिकांशतः जैसलमेर के पीले पाटुपान पत्थर से निर्मित हैं जो एक ऊँची आयताकार चौकी पर बने हैं इस चौकी की ऊंचाई सामान्यतः दो से तीन फुट व चौड़ाई 3–4 फुट देखने को मिलती है इस चौकी पर एक कमरेनुमा आकार का एक छोटा मंदिर बना होता है जिसके तीनों तरफ साधारण पत्थर से व सामने पूर्व दिशा की तरफ छोटा व बेलबूटों से अलंकृत द्वार निर्मित होता है इसके ऊपर गणेश जी की प्रतिमा भी विराजमान होती है। इस कमरे के ऊपर एक पिरामिडाकार का शिखर बना होता है जो नीचे से मंदिर जितना ही चौड़ा व ऊपर की और संकरा होता जाता है जो लगभग पूर्व मध्यकालीन फमसाना या लतीना मंदिर स्थापत्य कला की तरह शिखर दिखाई देता है। इस पिरामिडाकार के शिखर के नजदीक पूर्व दिशा की तरफ कहीं सिंहमुख व कहीं गौमुख बना होता है इस शिखर का ऊपरी हिस्सा अधिकांशतः समतल बिना शिखर का होता है। इस प्रकार से बने इन 7–8 फुट ऊँचे देवलों के गृर्भग्रह में सती हुई महिला और उसके पति की मूर्तियों वाली देवलियाँ स्थापित की हुई मिलती है। किसी–किसी देवल में दीपक रखने हेतु एक आला(स्थान) भी बना होता है।

जैसलमेर में पालीवाल ब्राह्मण समुदायों के कुछ गाँवों में मौजूद व मेरे द्वारा सर्वेक्षण के दौरान देखे गये कुछ विशिष्ट सती देवलों का विवरण निम्नलिखित है –

1. **घुरीया/मुहार–** इस गाँव में मुहार महादेव मंदिर के पीछे की तरफ कुछ देवल व छतरियां मौजूद है जिनमें से एक देवल अभी भी सुरक्षित अवस्था में है जिसमें लगी देवली पर अंकित वर्ष वि. सं. 1710(1653 ईस्वी) है।**(चित्र सं–13)**

चित्र सं–13, घुरीया/मुहार गाँव में स्थित सती का देवल (फोटो–दिलीप कुमार)

2. **दामोदरा गांव –** गाँव के दक्षिण में स्थित दामोदर तलाई के किनारे स्थित देवल के गर्भगृह में मौजूद देवली पर 1776(1719 ईस्वी) वर्ष अंकित है। गाँव के उत्तर में स्थित जेठेरी तालाब पर एक देवल मौजूद है इस देवल के गर्भगृह की अंदरूनी छत पर सिंदूर से बने हाथ के छापे देखने को मिलते हैं इसमें मौजूद देवली पर वि. सं. 1862(1805 ईस्वी) वर्ष अंकित है। **(चित्र सं.–14 एवं चित्र सं.–15)**

चित्र सं–14, दामोदरा गाँव में दामोदर तलाई पर स्थित सती का देवल (फोटो–दिलीप कुमार)

चित्र सं–15, दामोदरा गाँव में जेठेरी तालाब पर स्थित सती का देवल (फोटो–दिलीप कुमार)

3. **कुलधरा गाँव**[24] – कुलधरा गाँव के श्मशान स्थलों में सतियों के कुछ खंडित व कुछ सुरक्षित देवल आज भी मौजूद है परन्तु अधिकांश में देवलियाँ मौजूद नहीं है। यहाँ कुछ देवलों में देवलियां देखने को मिलती है जिनमें से दो के विवरण इस प्रकार है– संलग्न तस्वीर में आगे वाले देवल के गर्भगृह में मौजूद देवली की तिथि वि. सं. 1782(1725 ईस्वी) है जिसमें एक पुरुष व महिला साथ में मौजूद हैं। इसके पीछे वाले देवल में मौजूद देवली की तिथि भी वि. सं. 1782 (1725 ईस्वी) है व इसमें एक पुरुष व दो स्त्रियों की देवली मौजूद है।**(चित्र सं.–16)**

चित्र सं–16, कुलधरा गाँव स्थित सती का देवल (फोटो–दिलीप कुमार)

4. **धनवा गांव** – इस गाँव के श्मशान स्थलों में पांच से अधिक देवल मौजूद है जिनमें से कुछ आज भी सुरक्षित हैं इनमें मौजूद दो देवलों के गर्भगृह में मौजूद देवलियाँ वि. सं. 1786(1729 ईस्वी) तथा 1808(1751 ईस्वी) की हैं।**(चित्र सं.–17)**

चित्र सं–17, धनवा गाँव में स्थित प्रथम सती का देवल (फोटो–दिलीप कुमार)

5. **वोला गांव –** इस गाँव में स्थित देवल गाँव के बीचों–बीच में मौजूद है जो काफी अच्छी अवस्था में है। गाँव के निवासी इसे सती मानकर आज भी इसकी पूजा करते हैं इस देवल में मौजूद देवली पर वि. सं. 1810(1753 ईस्वी) वर्ष अंकित है। **(चित्र सं.–18)**

चित्र सं–18, वोला गाँव में स्थित सती का देवल (फोटो–दिलीप कुमार)

6. **उण्डा गांव –** इस गाँव के दक्षिण में स्थित एक तालाब की पाल के किनारे कुछ देवल स्थित है जिनमें से एक देवल में मौजूद देवली पर वि. सं. 1839(1782 ईस्वी) अंकित है व दूसरे देवल में लगी देवली का लेख व तिथि अस्पष्ट है।**(चित्र सं. 19)**

चित्र सं–19, उण्डा गाँव में स्थित सती का देवल (फोटो–दिलीप कुमार)

7. **खाभा गांव**[25] – इस गाँव के शमशान स्थलों में 10 से भी अधिक देवल देखने को मिलते हैं जिसमें से कुछ खंडित व कुछ सुरक्षित मौजूद है जिनमें से दो का विवरण यहाँ पर प्रस्तुत है– इन दोनों ही देवलों की चौकियां क्षतिग्रस्त हो चुकी हैं इनमें से एक के गर्भगृह में वि. सं. 1845(1788 ईस्वी) व दूसरी में वि. सं. 1864(1807 ईस्वी) की देवलियाँ मौजूद है।**(चित्र सं.–20)**

चित्र सं–20, खाभा गाँव स्थित सती का देवल (फोटो–दिलीप कुमार)

8. **पिथोड़ाई गांव** – इस गाँव के श्मशान स्थल में एक देवल विशिष्ट रूप से उल्लेखनीय हैं यह देवल एक छतरी के अंदर मौजूद है जिस कारण इसकी कलात्मकता व भव्यता अनूठी बन गई है यह देवल अन्य देवलों से थोड़ा छोटा है इसमें पिरामिडाकार के शिखर की मौजूदगी नहीं है इसकी चौकी को ही बढाकर उसके ऊपर छतरी का निर्माण किया गया है इसके अंदर मौजूद देवली पर वि. सं. 1861(1804 ईस्वी) वर्ष अंकित है। इस देवल से लोकमान्यता में सती प्रथा के प्रति आस्था की चरम स्थिति का पता चलता है साथ ही यह भी अनुमान लगाया जा सकता है कि यह सती समाज में अत्यंत प्रभावशाली व प्रतिष्ठित परिवार से रही होंगी।**(चित्र सं.–21)**

चित्र सं–21, पिथोड़ाई गाँव में स्थित सती का देवल (फोटो–दिलीप कुमार)

9. **भू–गांव** – इस गाँव में मौजूद तीन श्मशानों में से सिर्फ एक में ही सती का देवल देखने को मिला है जो क्षतिग्रस्त हो चुका है परन्तु फिर भी इसके गर्भगृह में लगी देवली वि. सं. 1867(1810 ईस्वी) की अभी तक मौजूद है।**(चित्र सं.–22)**

चित्र सं–22, भू गांव में स्थित सती का देवल (फोटो–दिलीप कुमार)

10. **काठोड़ी गांव** – इस गाँव में मौजूद देवल बाकि सभी गांवों से मिले देवल से भिन्न किस्म का है व काफी छोटा भी है यह एक ऊँची चौकी पर स्थित है जिसमें एक छोटी सी खिड़की जैसा द्वार लगा है व इसका आगे का हिस्सा काफी कलात्मक है इसमें लगी देवली पर तिथि अस्पष्ट है वहीं गाँव में स्थित श्रीकृष्ण मंदिर के बाँयीं तरफ मौजूद एक छतरी में बेहद कलात्मतक देवल मौजूद है जो वर्तमान में काफी अच्छी अवस्था में है इसमें भी देवली देखने को नहीं मिली है।**(चित्र सं.–23)**

चित्र सं–23, काठोड़ी गाँव में स्थित सती का देवल (फोटो–दिलीप कुमार)

11. **फतेहगढ गांव** – इस गाँव के तालाब के किनारे सती का एक देवल स्थित है जिसमें मौजूद देवली पर लेख व संवत् अपठनीय है यह देवल अन्य देवलों से थोड़ा भिन्न है इसके पिरामिडाकार के शिखर के ऊपर उलटे कमल के आकार का गोल गुम्बद बना है जबकि बाकि सभी देवलों में ऊपर का हिस्सा सपाट नजर आता है।**(चित्र सं. –24)**

चित्र सं.–24, फतेहगढ गाँव में स्थित सती का देवल (फोटो–दिलीप कुमार)

12. **जाजिया गांव** – इस गाँव के देवल में मिली देवली पर एक पुरुष की घुड़सवार मूर्ति मिली है जिसे स्थानीय समुदाय किसी भोमिया या झुंझार[26] की मूर्ति बताता है व साथ ही कमल के फूल पर विराजमान एक बच्चे को गोद में लिए सती की मूर्ति भी उत्कीर्ण है इस देवली का लेख अपठनीय है।**(चित्र सं.–25)**

चित्र सं.–25, जाजिया गाँव में स्थित सती का देवल (फोटो–दिलीप कुमार)

13. **कोडियासर गांव –** इस गाँव में 10 के करीब क्षतिग्रस्त देवल देखने को मिले हैं परन्तु गाँव से पूर्व दिशा में थोड़ी दूरी पर मौजूद तालाब की पाल के पास एक देवल सुरक्षित अवस्था में देखने को मिला है जो अपनी बनावट व पत्थर के उपयोग में भी अन्य देवलों से भिन्न है यह देवल भूरे पत्थरों से बना हुआ है इसका शिखर पिरामिडाकार का न होकर राजपूत व मुगल शैली के घुमावदार शिखर जैसा है इसमें गर्भगृह के पीछे की दीवार के बाहरी तरफ एक सूर्यचक्र बना हुआ है इसके छज्जों के ऊपर के कंगूरों पर कलशों की शृंखला बनी हुई है इस कलात्मक देवल में वर्तमान में कोई देवली मौजूद नही है जिस कारण इसके निर्माण के वर्ष का पता नहीं चल पाया है।**(चित्र सं.–26)**

चित्र सं.–26, कोडियासर गाँव में स्थित सती का देवल (फोटो–दिलीप कुमार)

14. **लाणेला गांव –** लाणेला गाँव के पूर्व में स्थित तालाब के किनारे एक देवल स्थित है जिसका शिखर बेहद ही कलात्मक व सुन्दर है इसमें मंदिर के शिखर की तरह आमलक व कलश मौजूद थे इसके गर्भगृह में मौजूद देवली टूटी हुई अवस्था में मिली जिसका लेख व तिथि अपठनीय है।**(चित्र सं.–27)**

चित्र सं.–27, लाणेला गाँव में स्थित सती का देवल (फोटो–दिलीप कुमार)

इस प्रकार जैसलमेर क्षेत्र में सती परम्परा के इतिहास लोकमान्यता और शिल्पकला में योगदान की जानकारी प्राप्त होती है जिसमें पालीवाल ब्राह्मण समुदाय की धार्मिक मान्यताओं का भी पता चलता है इनके अलावा जो सबसे महत्वपूर्ण तथ्य सामने आता है वह इन सती देवलों को अधिक से अधिक भव्य बनाने में किये गये आर्थिक व्यय से इस समुदाय की आर्थिक स्थिति व समृद्धता को भी दर्शाता है जहाँ जैसलमेर के शासकों के पीछे सती हुई रानियों को उन शासकों की बनी छतरियों में उनके साथ ही दर्शाया जाता रहा और जैसलमेर दुर्ग में राजमहल के प्रवेश द्वार की दीवार पर हाथों की छाप के रूप में पूजने की परम्परा प्रचलित रही। वहीं पालीवाल ब्राह्मण समुदाय द्वारा अपनी सतियों के लिए देवलियां व देवल बनवाए गये। जैसलमेर दुर्ग में गज चौक में राजमहल में जाने वाले मार्ग पर बनी सीढ़ियों के साथ संगमरमर का सिंहासन बना हैं। इसके नीचे सीढ़िया बनी हैं। दीवार पर सती रानियों के हाथ खुदे हैं। यहां पर पुराने समय रानियां सती होती थी, इस कारण इस स्थान को सतियों के पगोथिये कहा जाता हैं।[27]

***शोधार्थी व व्याख्याता (इतिहास)**
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
दामोदरा, जैसलमेर
****सहायक आचार्य**
राजकीय विश्वविद्यालय, जयपुर

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. ग्रोवर, बी एल., अलका मेहता, यशपाल, *आधुनिक भारत का इतिहास : एक नवीन मूल्याङ्कन, 1707 ई. से आधुनिक काल तक,* एस चन्द एंड कम्पनी लिमिटेड, नई दिल्ली संस्करण–36, 2018, पृ. 120, के अनुसार भारत के तत्कालीन गर्वनर जनरल लार्ड विलियम बेंटिक इस कानून से नियम 17 द्वारा विधवाओं को जलाना अवैध घोषित कर दिया गया था।
2. के. सी. श्रीवास्तव, *प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति,* यूनाइटेड बुक डीपो, इलाहाबाद, 2019–20, पृ 88, के अनुसार ऋग्वेद के दशम मंडल के एक सूक्त से पता चलता है कि इस प्रागैतिहासिक काल की प्रथा को जिन्दा रखने के लिए एक स्त्री अपने मृत पति की चिता के साथ लेटती थी फिर उसके परिवार के सदस्य उससे उठने का आग्रह करते थे और वह उठ जाती थी–

उदीर्श्व नार्यभिजीवलोकं गतासुमेतमुपशेष एहि।
हस्ताग्रभागस्य दिधिषोस्तवेदं पत्युर्जनित्वमभिसंवभूथ।।–ऋग्वेद, 10. 18. 8

3. फ्लीट, जे. एफ., कॉर्पस इंस्क्रिप्शनम इंडिकारम, भाग–तृतीय, द सुपरिन्टेन्डेन्ट ऑफ गॉवरमेन्ट प्रिन्टिंग, इंडिया, कलकता, 1888, पृ. 80–84
4. के. सी. श्रीवास्तव, *प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति,* पृ. 492
5. बी एल ग्रोवर, अलका मेहता, *यशपाल, आधुनिक भारत का इतिहास : एक नवीन मूल्याङ्कन, 1707 ई. से आधुनिक काल तक,* पृ. 271–272
6. लक्ष्मीचन्द सेवक व दीवान नथमल, *तवारीख जैसलमेर* : राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर, 2019
7. पालीवाल शिवनारायण पालीवाल, पालीवाल, प्रदीप (सं.) *पालीवाल इतिहास एवं स्मारिका,* पालीवाल ब्राह्मण

हितकारी समिति, 2016, जयपुर,
8. शर्मा, नन्दकिशोर, *जैसलमेर का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, भाग–2,* द्वितीय संस्करण, 2011, सीमान्त प्रकाशन जैसलमेर
9. भाटी, हुकमसिंह, *भाटी वंश का गौरवमयी इतिहास, जैसलमेर राज्य एवं ठिकाने, भाग–1,* इतिहास अनुसंधान संस्थान, चौपासनी, जोधपुर, 2003
10. व्यास, मांगीलाल मयंक, *जैसलमेर राज्य की इतिहास :द्वितीय संस्करण* राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर, 2011
11. रेऊ, पण्डित विश्वेश्वर नाथ, *मारवाड़ राज्य का इतिहास, भाग–1,* राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर, 1938
12. जेम्स टोड कृत *राजस्थान का पुरातत्व एवं इतिहास, भाग–2,* अनुवादक, डॉ. ध्रुव भट्टाचार्य, जहूर खां मेहर : राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर, 2015
13. नैणसी, मुंहता, *मुंहता नैणसी री ख्यात,* (संपादक) बदरीप्रसाद साकरिया,, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, संवत् 2018
14. नैणसी, मुंहता, *मारवाड़ रा परगनां री विगत भाग–2,* (सं) फतहसिंह (जोधपुरः राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, 1969
15. सोमानी, राम वल्लभ, *हिस्ट्री ऑफ जैसलमेर,* प्रथम संस्करण 1990, पंचशील प्रकाशन फिल्म कॉलोनी जयपुर
16. सिंह, हरदयाल, *मर्दुमशुमारी राजमारवाड़ 1891 ई. : राजस्थान की जातियों का इतिहास एवं रीतिरिवाज,* महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश शोध केन्द जोधपुर, तृतीय संस्करण 2010
17. इरस्कीन, के. डी., राजपुताना स्कॉटिश मिशन इण्डस्ट्रीयल कं. लि. अजमेर 1909
18. माहेश्वरी, हरिवल्लभ, *जैसलमेर राज्य का मध्यकालीन इतिहास,* राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर
19. गढवीर, मेघाराम, जैसलमेर राज्य का सामाजिक इतिहास, प्रथम संस्करणः 2012, राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर
20. ऋषिदत्त मोहनलाल कुलधर पालीवाल, *भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में पालीवाल ब्राह्मण समाज का योगदान,* माँ शारदा गृह पुस्तकालय, जैसलमेर, प्रथम संस्करण 2021
21. कुमार, दिलीप व तमेघ पंवार, *उजाणे की चौकियां : जैसलमेर जिले में पालीवाल ब्राह्मणों की विशिष्ठ धार्मिक परम्परा का अध्ययन,* शोधश्री, अ पिअर रिव्युड इंटरनेशनल रेफर्ड जर्नल, अवस–55, अप्रेल–जून–2025
22. ब्रायन, एंथोनी गोर्डन ऑ, *द एनसिएंट क्रोनोलोजी ऑफ थार डेजर्ट द भाटिक लौकिक एंड सिंध एरास,* पृ. सं. 129, ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली, 1996,
23. ब्रायन, एंथोनी गोर्डन ऑ, *द एनसिएंट क्रोनोलोजी ऑफ थार डेजर्ट द भाटिक लौकिक एंड सिंध एरास,* पृ. सं. 131
24. शर्मा, नन्द किशोर, *सुनहरा नगर जैसलमेर,* सीमान्त प्रकाशन, जैसलमेर, प्रथम संस्करण 2014, पृ. 50–52
25. शर्मा, नन्द किशोर, *सुनहरा नगर जैसलमेर,* सीमान्त प्रकाशन, जैसलमेर, प्रथम संस्करण 2014, पृ. 53–54
26. किसी युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए व्यक्ति को स्थानीय समुदाय में झुंझार कहा जाता है।
27. शर्मा, नन्द किशोर, *सुनहरा नगर जैसलमेर,* सीमान्त प्रकाशन, जैसलमेर, प्रथम संस्करण 2014, पृ. 23